Chap 02: उपभोक्ता व्यवहार का सिद्धांत - I

Prat 1: उपयोगिता की अवधारणा

हम पढेंगे:

उपभोक्ता कौन है? उपभोक्ता व्यवहार; उपभोक्ता संतुलन, उपयोगिता का अर्थ, विशेषताएं एवं अवधारणाये; घटती सीमांत उपयोगिता का नियम, सम सीमांत उपयोगिता का नियम, उदासीनता वक्र, बजट रेखा, उदासीनता वक्र विश्लेषण द्वारा उपभोक्ता का संतुलन

उपभोक्ता(Consumer) कौन है?

उपभोक्ता एक आर्थिक एजेंट है जो उपभोग की क्रिया द्वारा अपनी किसी आवश्यकता विशेष की संतुष्टि करता है।

उपभोक्ता शब्द एक व्यापक शब्द है जिसके अंतर्गत ऐसे *व्यक्तियों, समूहों, परिवार अथवा संस्थाओं* को सम्मानित किया जाता है जो अपनी आवश्यकताओं को प्रत्यक्ष रूप से संतुष्ट करने के लिए अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का प्रयोग करता है।

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@dhali_sir*

उपभोक्ता व्यवहार (Consumer's Behaviour)

उपभोक्ता व्यवहार का अभिप्राय उस प्रक्रिया से है जिसमें उपभोक्ता यह **चुनाव** करता है कि वह अपनी **सीमित आय** को विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं पर किस प्रकार **व्यय** करें कि उसे **अधिकतम उपयोगिता** प्राप्त हो जाए।

उपभोक्ता संतुलन (Consumer's Equilibrium)

असीमित आवश्यकताओं तथा सीमित साधनों के होने पर एक उपभोक्ता का उद्देश्य अपने व्यय से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना होता है और जब वह अधिकतम संतुष्टि प्राप्त कर लेता है तब उपभोक्ता संतुलन की अवस्था में होता है।

प्रो. सैमुअलसन के शब्दों में, **"एक उपभोक्ता उस समय संतुलन में होता है जब वह अपनी दी हुई आय तथा बाजार कीमतों से प्राप्त संतुष्टि को अधिकतम कर लेता है"।**

उपयोगिता/ तुष्टिगुण (Utility)

किसी वस्तु या सेवा में निहित वहाँ शक्ति या क्षमता जिससे किसी उपभोक्ता की आवश्यकता की संतुष्टि होती है, उपयोगिता कहते हैं।

उपयोगिता की विशेषताएँ (Features of Utility)

- उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक धारणा है।
- उपयोगिता व्यक्ति परक होती है।
- उपयोगिता का विचार सापेक्षिक है।
- उपयोगिता नैतिक सिद्धांतों से प्रभावित नहीं होती।
- उपयोगिता का अर्थ अनुमानित संतुष्टि से होता है।

गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण (Cardinal Utility Analysis)

इसे *मार्शल का उपयोगिता विश्लेषण या सीमांत उपयोगिता विश्लेषण* के नाम से भी जाना जाता है।

प्रो. मार्शल के अनुसार उपयोगिता को मुद्रा के माध्यम से मापा जा सकता है।

वस्तु के लिए दी जाने वाली कीमत ही उपयोगिता की गणना का आधार होता है अर्थात मार्शल ने उपयोगिता को गणनावाचक संख्याओं 1,2,3..... आदि द्वारा संबोधित किया।

उपयोगिता की धारणाएं (Concepts of Utility)

सीमांत उपयोगिता	कुल उपयोगिता
Marginal Utility	Total Utility
MU	TU

सीमांत उपयोगिता (Marginal Utility)

सीमांत शब्द का अर्थ है - एक अतिरिक्त।

किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से जो अतिरिक्त उपयोगिता मिलती है उसे सीमांत उपयोगिता कहते हैं।

दूसरे शब्दों में, **एक अतिरिक्त इकाई के उपयोग से कुल उपयोगिता में जो वृद्धि होती है, उसे सीमांत उपयोगिता कहते हैं।**

प्रो. **बोल्डिंग** के अनुसार, "किसी वस्तु की दी हुई मात्रा की सीमांत उपयोगिता कुल उपयोगिता में होने वाली वह वृद्धि है, जो उसके उपभोग में एक इकाई के बढ़ने के परिणाम स्वरूप प्राप्त होती है"।

$$MU = TUn - TUn\text{-}1$$

उदाहरण

वस्तु की इकाइयां	सीमांत उपयोगिता (MU)
1	40
2	30
3	20
4	10
5	0
6	- 10
7	- 20

चित्र:

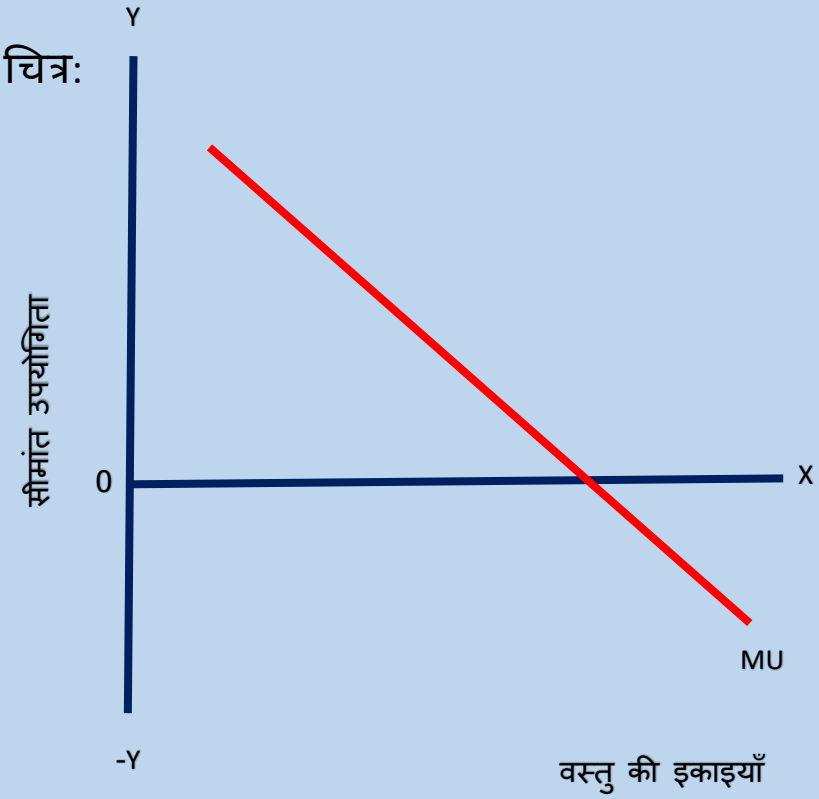

कुल उपयोगिता (Total Utility)

उपभोग की सभी इकाइयों के उपभोग से उपभोक्ता को जो उपयोगिता प्राप्त होती है, उसे कुल उपयोगिता कहते हैं।

कुल उपयोगिता उपभोग की विभिन्न इकाइयों से प्राप्त सीमांत उपयोगिताओं का योग होती है।

वस्तु की इकाइयां	सीमांत उपयोगिता (MU)	कुल उपयोगिता (TU)
1	40	40
2	30	70
3	20	90
4	10	100
5	0	100
6	-10	90
7	-20	70

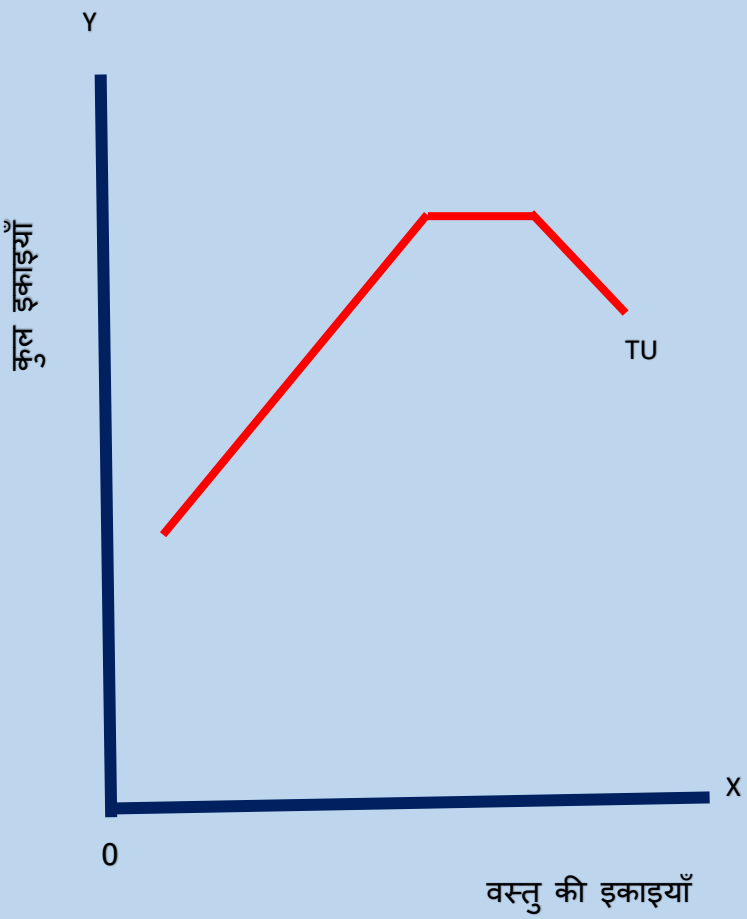

सीमांत उपयोगिता तथा कुल उपयोगिता से संबंध

1. जब सीमांत उपयोगिता धनात्मक है। चाहे वो घट रही हो तब कुल उपयोगिता बढ़ती है।
2. जब सीमांत उपयोगिता शून्य हो जाती है, तब की उपयोगिता अधिकतम होती है।
3. जब सीमांत उपयोगिता ऋणात्मक होती है तब कुल उपयोगिता घटने लगती है।

ह्रासमान / घटती सीमांत उपयोगिता का नियम
(Law of Diminishing Marginal Utility)

इसे **आवश्यकता संतुष्टि का नियम** भी कहते हैं।

यह उपभोक्ता एक महत्वपूर्ण नियम है जो दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित होने के कारण ***सर्वमान्य एवं सार्वभौमिक*** है।

इस नियम का सर्वप्रथम उल्लेख ***ऑस्ट्रियन*** अर्थशास्त्री ***एच एच गोसेन*** ने किया था। अतः इसे **गोसेन का प्रथम नियम** भी कहा जाता है।

इस नियम के अनुसार,

जब किसी वस्तु की मानक इकाइयों का लगातार अधिक से अधिक उपभोग किया जाता है, तब प्रत्येक इकाई से प्राप्त होने वाली सीमांत उपयोगिता घटती जाती है। यहाँ सभी वस्तुओं तथा सेवाओं के संबंध में लागू होता है।

इसे संतुष्टि का *आधारभूत एवं सार्वभौमिक नियम* भी कहा जाता है।

प्रो. मार्शल के अनुसार, "अन्य बातें सामान रहने पर किसी व्यक्ति के पास किसी वस्तु की मात्रा में वृद्धि होने से जो अतिरिक्त लाभ प्राप्त होता है वह उस वस्तु की मात्रा की प्रत्येक इकाई की वृद्धि के साथ साथ घटता चला जाता है"।

घटती सीमांत उपयोगिता नियम के लागू होने की आवश्यकता शर्तें:

1. उपभोग की जाने वाली वस्तु की सभी इकाइयों या गुण तथा परिणाम में समान होनी चाहिए।
2. उपभोग निरंतर क्रम में होना चाहिए।
3. इस वस्तु की इकाई का आकार पर्याप्त होना चाहिए।
4. उपभोक्ता विवेकशील होना चाहिए।
5. उपभोक्ता की आय रुचि, फैशन और उपभोग प्रवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

सम सीमांत उपयोगिता का नियम (Law of Equi-Marginal Utility)

अथवा

सीमांत उपयोगिता के प्रयोग द्वारा उपभोक्ता का संतुलन

सम सीमांत उपयोगिता का नियम विश्लेषण में ***उपभोक्ता का संतुलन*** स्पष्ट करता है।

इस नियम को ***गोसेन का दूसरा नियम*** भी कहा जाता है।

इस सिद्धांत के अनुसार 'एक उपभोक्ता अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए अपनी आय को विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार व्यय करेगा कि प्रत्येक वस्तु पर खर्च की गई रूचियों की अंतिम इकाई से समान सीमांत उपयोगिता प्राप्त होगी'।

प्रो. मार्शल के अनुसार, "यदि किसी व्यक्ति के पास ऐसी वस्तु है जिससे वह विभिन्न प्रकार से प्रयोग कर सकता है, तो वह इसका अनेक प्रयोग में इस प्रकार वितरण करेगा कि सीमांत उपयोगिता प्रत्येक में समान हो जाए"।

उपभोक्ता संतुलन का निर्धारण (Determination of Consumer's Equilibrium)

एक वस्तु की स्थिति में

जब एक उपभोक्ता अपनी आय से केवल एक वस्तु को ही खरीदना चाहता है, तो उसे ध्यान में रखना चाहिए कि उस पर सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम लागू होता है।

अर्थात वस्तु की प्रत्येक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से प्राप्त होने वाली उपयोगिता बढ़ती जाती है। जबकि मुद्रा की उपयोगिता स्थिर रहती है।

इस प्रकार एक विवेकशील उपभोक्ता किसी वस्तु का उपभोग उस सीमा तक करेगा जहाँ उस वस्तु की अंतिम इकाई से प्राप्त **सीमांत उपयोगिता** उस वस्तु की कीमत के रूप में दी जाने वाली **मुद्रा की उपयोगिता** के बराबर हो जाती है।

इस प्रकार अपने व्यय का समायोजन करने के लिए उपभोक्ताओं को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होती है और वो संतुलन अवस्था में होता है।

उपभोक्ता संतुलन = **वस्तु X की सीमांत उपयोगिता** = वस्तु X की मुद्रा कीमत का उपयोगिता मूल्य

MUx = Px

मुद्रा की सीमांत उपयोगिता (Marginal Utility of Money):

यदि हम एक वस्तु की यूटिल के रूप में सीमांत उपयोगिता को रुपए की सीमांत उपयोगिता से विभाजित कर दे। तो हम एक वस्तु की मुद्रा के रूप में सीमांत उपयोगिता ज्ञात कर सकते हैं।

मुद्रा के रूप में MUx = यूटील के रूप में MUx / रुपए की MU

उदाहरण:

X वस्तु की इकाइयां	MUx	Px	प्राप्त उपयोगिता का अंतर
1	40	20	20
2	35	20	15
3	30	20	10
4	25	20	5
5	20	20	0
6	15	20	-5

उदासीनता वक्र / तटस्थता वक्र विश्लेषण Indifference Curve Analysis

उदासीनता/ तटस्थता/ अनाधिमान वक्र

उदासीनता वक्र वह वक्र है जिसका प्रत्येक बिंदु दी हुई वस्तुओं के ऐसे संयोगों को बताता है जिससे किसी उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्राप्त होती है

उदासीनता वक्र पर अंकित प्रत्येक बिंदु उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्रदान करने वाली दो वस्तुओं के अनेक संयोगों को व्यक्त करता है।

उदासीनता वक्रों को सम संतुष्टि वक्र (Iso utility CURVE) भी कहा जाता है।

उदासीनता वक्र सूची (Indifference Schedule)

उदासीनता वक्र विश्लेषण के अंतर्गत उपभोक्ता को दो या दो से अधिक उपभोग वस्तुओं की पसंदगी अथवा अनुराग क्रम के आधार पर समान संतुष्टि प्राप्त करने वाले संयोगों की एक सूची तैयार की जाती है जिसे उदासीनता सूची कहते है।

संयोग क्रम	वस्तु X	वस्तु Y
A	1	20
B	2	14
C	3	10
D	4	8

उदासीनता वक्र

संयोग क्रम	वस्तु X (पेन)	वस्तु Y (पेंसिल)
A	1	20
B	2	14
C	3	10
D	4	8

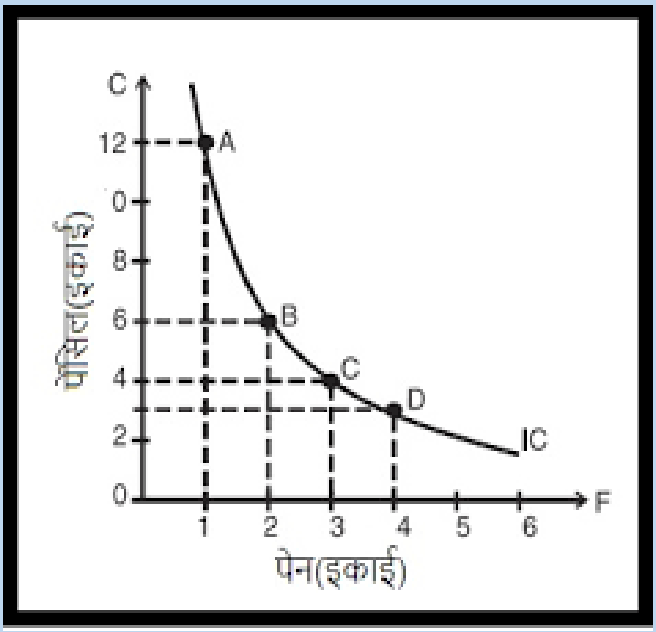

उदासीनता मानचित्र (Indifference Map)

एक उदासीनता वक्र पर उपभोक्ता को एक समान संतुष्टि स्तर प्राप्त होता है।

एक उपभोक्ता के एक नही वरन अनेक उदासीनता वक्र हो सकते हैं।

प्रत्येक अलग उदासीनता वक्र पर संतुष्टि का अलग स्तर होता है।

इस प्रकार अनेक संतुष्टि स्तरों को दर्शाने वाले अनेक उदासीनता वक्र मिलकर उदासीनता मानचित्र बनाते है।

चित्र:

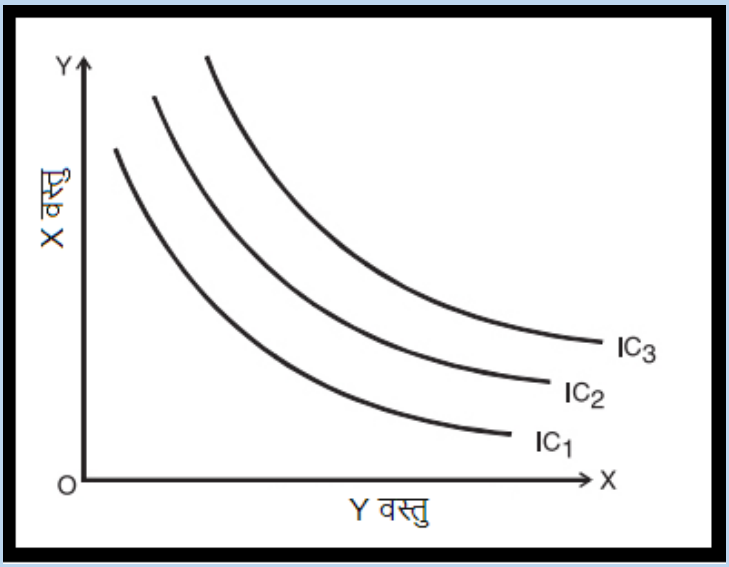

उदासीनता वक्रों को प्रकृति/ विशेषताएं:

1. उदासीनता वक्र बाएं से दाएं नीचे की ओर गिरता हुआ होता है
2. उदासीनता वक्र मूल बिंदू की ओर उन्नतोदर होते हैं
3. दो उदासीनता वक्र एक दूसरे को काटते
4. ऊंचे उदासीनता वक्र संतुष्टि के ऊंचे स्तर को व्यक्त करते हैं

सीमांत प्रतिस्थापन दर (Marginal Rate of Substitution)

जिस दर पर कोई व्यक्ति एक वस्तु की अतिरिक्त इकाइयों को दूसरी वस्तु की अतिरिक्त इकाइयों के साथ बदलने के लिए तैयार हो जाता है, उस दर को सीमांत प्रतिस्थापन दर कहते है।

X की Y के लिए सीमांत प्रतिस्थापन दर Y की वह मात्रा होगी जो X की एक अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए घटायी जाती है जिससे कि उपभोक्ता का संतोष पहले के ही समान बना रहे।

MRSxy= Y वस्तु की मात्रा में कमी/ X वस्तु की मात्रा में वृद्धि

उदाहरण:

सेब (वस्तु X)	संतरा (वस्तु Y)	X की Y के लिए MRSxy
1	20	-
2	14	6:1
3	10	4:1
4	8	2:1
5	7	1:1

चित्र:

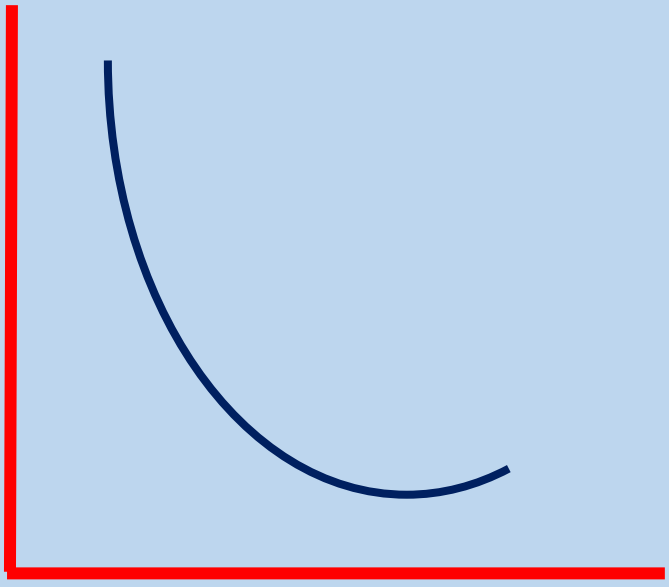

घटती हुई सीमांत प्रतिस्थापन दर

(Diminishing Marginal Rate of Substitution)

इस नियम के अनुसार किसी व्यक्ति के पास एक वस्तु की जितनी मात्रा बढ़ती जाती है, वह दूसरी वस्तु का इस वस्तु के लिए प्रतिस्थापन, घटती दर पर करता जायेगा।

एक दिष्ट अधिमान (Monotonic Preference)

एक दिष्ट अधिमान से मतलब है कि एक विवेकशील उपभोक्ता एक वस्तु की अधिक मात्रा को हमेशा वरीयता देता है क्योंकि यह उसे संतुष्टि का उच्च स्तर प्रदान करती है।

साधारण शब्दों में एक दिष्ट अधिमान के अनुसार जब उपभोग बढ़ता है तो कुल उपयोगिता भी बढ़ती है।

कीमत रेखा या बजट रेखा

(Price Line or Budget Line)

कीमत रेखा दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को व्यक्त करती है जो उपभोक्ता अपनी दी हुई आय एवं वस्तुओं की वर्तमान कीमत के आधार पर खरीद सकता है।

बजट सेट (Budget Set)

बजट सेट दो वस्तुओं के उन सभी संयोगों का सेट होता है जिन्हें एक उपभोक्ता अपनी दी गई आय और बाजार में कीमतों के अनुसार खरीद सकता है।

बजट रेखा समीकरण

$$M = Q1P1 + Q2P2$$

संयोग	वस्तु X	वस्तु Y	व्यय की मुद्रा = आय (Y)
E	5	0	5×4+0×2= 20
F	4	2	4×4+2×2=20
G	3	4	3×4+4×2=20
H	2	6	2×4+6×2=20
I	1	8	1×4+8×2=20
J	0	10	0×4+10×2=20

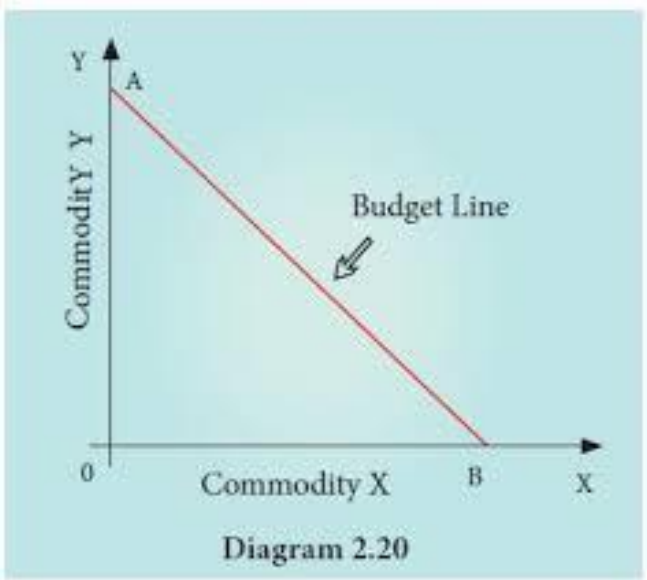

Diagram 2.20

बजट रेखा : महत्वपूर्ण बिंदु

- वे बंडल जिनकी लागत उपभोक्ता की मौद्रिक आय के बराबर होती है, बजट रेखा पर स्थित होती है।
- बजट रेखा नीचे की ओर गिरती हैं क्योंकि एक वस्तु को अधिकता में दूसरी वस्तु की कुछ इकाइयों में कमी करके ही खरीदा जा सकता है
- वे बंडल जिनकी लागत उपभोक्ता की मौद्रिक आय से कम होती है, आय से कम व्यय को दर्शाते है। वे बजट रेखा के अंदर स्थित होते है।
- वे बंडल जिनकी लागत उपभोक्ता की मौद्रिक आय से अधिक होती है, उपभोक्ता को प्राप्त नही होते है वे बजट रेखा के पार होते हैं।

बजट रेखा को विशेषताएं:

- बजट रेखा नीचे की ओर गिरती हुई होती है
- बजट रेखा एक सरल रेखा होती है

उदासीनता वक्र विश्लेषण की सहायता से उपभोक्ता का संतुलन (Consumer's Equilibrium by Indifference Curve Analysis)

एक उपभोक्ता उस समय संतुलन की अवस्था में होता है जब अपनी सीमित आय आय की सहायता से वास्तुओं को उनकी दी गई कीमतों पर खरीदकर अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करता है । उपभोक्ता की कीमत रेखा उसकी आय एवं उपभोग वस्तुओं के कीमतों से निर्धारित होती है । इस कीमत रेखा के साथ उपभोक्ता ऊँचे से ऊँचे उदासीनता वक्र तक पहुँचने का प्रयास करता है ।

उदासीनता वक्र विश्लेषण में उपभोक्ता के संतुलन की दो शर्ते है -

1. **<u>उदासीनता वक्र कीमत रेखा को स्पर्श करें -</u>**

   अर्थात मात्रात्मक रूप में X वस्तु की Y वस्तु के लिए सीमांत प्रतिस्थापन दर X और Y वस्तुओं की कीमतों के अनुपात के बराबर होनी चाहिए ।

   MRSxy = Px / Py

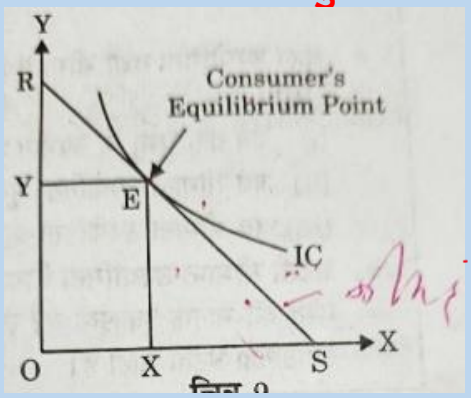

2. **स्थायी संतुलन के लिए संतुलन बिंदु पर उदासीनता वक्र मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होनी चाहिए । अर्थात संतुलन बिंदु पर MRS घटती हुई होनी चाहिये ।**

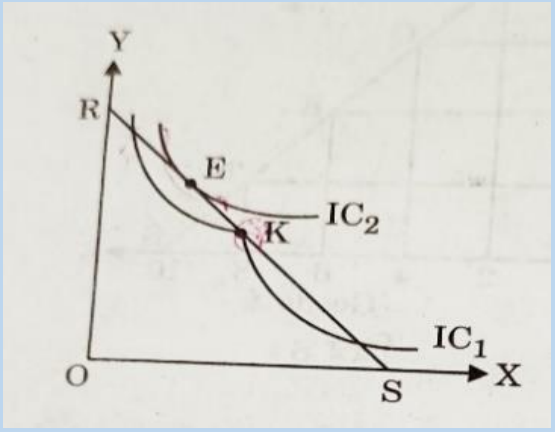

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है (Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@dhali_sir*